समानता और ट्रस्टीशिप

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स न० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ सम्पादक : मगनभाअी प्रभुदास देसाअी अंक ३४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २४ अक्तूबर, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

महादेवके नन्हेरे

'नवजीवन' और 'हरिजन' पत्रोंके पाठक-जगत्के खूब परिचित और अक्षरदेहमें स्व० महादेवभाअीके अनुज जैसे श्री चन्द्रशंकर शुक्लकी १६ अक्तूबरको वम्बअीमें असामयिक मृत्यु हो गअी। जन्म-मरणके प्रतिदिनके आवागमनोंमें विस्मृतिके गर्भमें लीन हो जाने जैसी अिस छोटीसी घटनाके समाचार 'हरिजन' पत्रोंके पाठकोंके अलावा भारतके राष्ट्रपति और अुपराष्ट्रपतिसे लेकर अिस देशके सार्वजनिक क्षेत्रमें काम करनेवाले असंख्य छोटे-बड़े कार्यकर्ताओंमें तथा अनेक विदेशवासी मित्रोंमें गहरे शोककी भावना फैलावेंगे।

अुनकी आखिरकी गंभीर बीमारीमें मैं और भाअी देवदास गांधी अुनके आप्तजनों और विशाल मित्रवृन्दके साथ कअी दिनों तक अुनके पास हाजिर रहे। सज्जनों, सन्तों या रामकृष्ण परमहंस तथा रमण महर्षि जैसे दिव्य पुरुषोंको भी शरीरकी आधि-व्याधियां अथवा देहके दंड छोड़ते नहीं और अुनके सामने बड़े-बड़े वीरों तथा योद्धाओंको भी बेबस और बालककी तरह लाचार बनना पड़ता है, अिस सत्यका प्रत्यक्ष दर्शन हम सबको जीवनमें फिर अेक बार हुआ।

जो मुझसे अुमरमें करीब १३ बरस छोटे थे, जिन्हें विद्यार्थी-दशामें हम सबने देखा-जाना था, अुन्हें अिस तरह मुझसे पहले जाते देखनेका यह दुर्भाग्य मेरे लिअे असह्य हो पड़ा है। लेकिन अीश्वरकी अिच्छाके सामने सिर झुकानेके सिवा मनुष्यके लिअे कोअी चारा ही नहीं है।

बावन वर्षकी छोटीसी जिन्दगीमें भाअी चंद्रशंकरने जो सिद्धियां प्राप्त की थीं, वे हर किसीको आश्चर्यमें डालनेवाली और हर किसीका सिर गर्वसे अूंचा अुठानेवाली थीं। मैं मानता हूं कि गांधीजी द्वारा स्थापित गूजरात विद्यापीठने अपने ३३ वर्षके कार्य-कालमें जो स्नातक तैयार किये, अुनका सर्वश्रेष्ठ नमूना भाअी चन्द्रशंकर शुक्ल थे। स्व० महादेवभाअीको अपनी आदर्श-मूर्ति मानकर निरन्तर भक्तिपूर्वक अुन्होंने अपने आपको गढ़ा और विद्याकी साधनामें अनोखी सिद्धि प्राप्त करके बहुत बड़ी जीवन-समृद्धि अर्जित की। और लगभग महादेवभाअीकी ही अुम्रमें चले गये।

गूजरात विद्यापीठके भी पूरे डिग्रीधारी न होते हुअे भी जीवन-साधनामें महादेवभाअीको अपनी ध्यानमूर्ति बनाकर अुन्होंने अूंचे दर्जेकी शिष्ट और परिमार्जित गुजराती और अंग्रेजी लिखनेकी कला हस्तगत की। अुनके गुजराती और अंग्रेजी अक्षर भी हूबहू महादेवभाअीके ही देख लीजिये। हम लोग ही नहीं, खुद गांधीजी और महादेव भाअी भी बहुत बार धोखा खा जाते थे। वैसी ही समान मोतीकी लड़ियां। काट कर गलेमें पहननेका मन हो जाय!

अजंताके कलाकारोंकी कलाकी याद दिलानेवाली शिष्ट, संस्कारी, परिमार्जित 'क्लासिक' गुजराती लिखनेमें, कठिनसे कठिन तात्त्विक या संस्कृति-संबंधी चर्चा, विचारों या ग्रंथोंको 'क्लासिक' गुजरातीमें अुतारनेकी कलामें गांधीजीके अंतेवासियोंके हमारे मंडलमें — शायद सारे गुजरातमें — महादेवभाअीके बाद भाअी चन्द्रशंकरकी बराबरी करनेवाला दूसरा कोअी नहीं था। मेरे बाद अुन्होंने 'नवजीवन' और 'हरिजन' पत्रोंमें गांधीजीके लेखोंका अनुवाद, मुझसे भी कहीं ज्यादा योग्यतासे, महादेवभाअीकी अमृतमयी दृष्टिके नीचे रहकर वर्षों तक किया और अनुवादकी कलामें अनोखी निपुणता प्राप्त की। भाषा पर भी अुनका वैसा ही प्रभुत्व था। गूजरात विद्यापीठके विद्यार्थी और अुगते हुअे तरुण लेखक और सम्पादकके रूपमें अपनी पहली-पहली रचनायें मेरे पास सुधारने-संवारनेके लिअे लानेवाले तथा काफी समय तक मेरे पास लिखने और छापनेकी तालीम लेनेवाले भाअी चन्द्रशंकरसे पिछले वर्षोंमें अपने ही अंग्रेजी और गुजरातीके कच्चे लेख सुधरवानेमें मैं गौरव अनुभव करता था। वे भी अपना सब काम छोड़कर पुत्रकी तल्लीनतासे यह सब करते थे। अुनकी असामयिक मृत्युसे गुजरात आज सचमुच कंगाल बन गया है।

महादेवभाअीके कारावासके दिनोंमें सन् १९३३-३४ में थोड़े समयके लिअे गांधीजीके मंत्रीका काम भी अुन्होंने किया था। अुस अर्सेमें वे महादेवभाअीकी तरह ही 'हरिजन' पत्रोंमें साप्ताहिक पत्र और दूसरे लेख लिखते तथा रोज-रोजकी घटनाओं, मुलाकातों वगैराकी डायरी रखते थे। अिसके मीठे फल अुन्होंने गांधीजीके जीवनप्रसंगों वगैराका वर्णन करनेवाले अंग्रेजी और गुजरातीके अनेक ग्रंथोंके रूपमें लोगोंको चखाये हैं। 'हरिजन' पत्र जब पूनासे प्रकाशित होते थे, तब गांधीजी और महादेवभाअीकी देखरेखमें अुप-संपादकके नाते अुन्होंने अंग्रेजी और गुजराती संस्करणोंका संपादन भी बरसों तक किया और दोनोंको अपने कामसे पूरा-पूरा संतोष दिया।

अुनकी विद्वत्ता अगाध और अपार थी। धर्मविचार, देश-विदेशकी संस्कृति, गांधी-विचारधारा, गांधीजीके जीवन आदि विषयों पर लिखे हुअे अुनके लेख और मूल तथा अनूदित मिलकर अुनकी २५–३० अंग्रेजी और गुजराती पुस्तकें भारत और गुजरातके चिरन्तन 'क्लासिक' साहित्यमें स्थायी वृद्धि करनेवाली हैं। अुनमें बहुतसी पुस्तकें अैसी हैं, जो हमारे विश्वविद्यालयोंके पाठ्यक्रमोंमें स्थायी जगह ले सकती हैं। संस्कृत ग्रंथोंका अुनका अध्ययन और परिशीलन भी अुनके अंग्रेजीके अध्ययन जितना ही विशाल, व्यापक और गहरा था। गीता, वाल्मीकि रामायण और श्रीमद्भागवतके प्रति अुनकी अगाध भक्ति थी। पिछले दो ग्रन्थोंके श्लोक, वचनामृत और गहरे अवलोकनसे भरे फिकरे हमेशा अुनकी जबान पर ही रहते थे। वे अुन्हें अुद्धृत करनेमें कभी थकते न थे। बाअिबलका अुनका अभ्यास भी अुतना ही गहरा था। हिन्दू संस्कृति और विचारसरणीको पेश करनेकी श्री राधाकृष्णन्की शैलीने अुनके

www.vinoba.in

चिन्तन और लेखन पर लगभग गांधीजी जितना ही असर डाला था। श्री राधाकृष्णन्‌के अनेक ग्रन्थोंके अनुपम अनुवाद अुन्होंने गुजरातको भेंट किये हैं।

अुनकी सज्जनता, भलमंसी, विनय, नम्रता सब कुछ अनोखा था। महादेवभाअीकी विभूति-अुपासना कर करके कीट-भ्रमर न्यायसे अुनके अनेक गुण भाअी चन्द्रशंकरने अपनेमें सफलतासे अुतार लिये थे। और जीवनक्षेत्रमें छोटे कहे जानेवाले मनुष्योंको जिस प्रकार अपनेसे बहुत कम योग्यतावालोंके हाथ बहुत बार कष्ट सहना पड़ता है, अुसी प्रकार अुन्हें भी काफी कष्ट अुठाना पड़ा। फिर भी अुन्होंने कभी किसीसे अिसकी शिकायत नहीं की।

पिछले १०-१२ बरसोंमें अुनकी विद्वत्ता और संस्कारिताकी खुशबू देश-विदेश सब जगह पहुंची थी। गांधीजीके अेक समयके मंत्री और अन्तेवासीके नाते हर प्रान्तके राजनीतिक नेताओं, राजनीतिज्ञों, अधिकारियों और बड़ेसे बड़े देशनेताओंसे अुनका सम्पर्क और सम्बन्ध रहता, लेकिन अैसी पहचानोंसे कोअी व्यक्तिगत लाभ अुठानेकी अिच्छा अुन्होंने कभी न रखी। अंग्रेजी सल्तनतके बड़ेसे बड़े राजनीतिज्ञों, भूतपूर्व वाअिसरायों, आन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त ग्रंथकारों या मिशनरियों सबके साथ वे अेक ग्रंथकार अथवा सम्पादकके नाते या व्यक्तिगत रूपमें पूरे आत्मविश्वाससे और सर्वथा स्वाभाविक रूपमें पत्रव्यवहार करते और अच्छे-अच्छे ख्यातनामा अंग्रेज और अमेरिकन राजनीतिज्ञों अथवा मिशनरियोंके भेजे हुअे लेख भी अपनी मांग या ग्रंथकी योजनाके अनुसार न होते, तो अुन्हें रद्द कर देनेमें वे जरा भी नहीं हिचकिचाते थे।

अुनका गृह-जीवन सुखी था। भगवान्‌ने अुन्हें सुशील पत्नी और चंपाकली जैसी दो छोटी लड़कियां दी थीं। वर्षों पहले महादेवभाअीने गांधीजीको अिस छोटेसे परिवारका परिचय, अुन्हींका विनोद अुद्धृत करते हुअे 'चन्द्रशंकरके "Them" मिलने आये हैं' कहकर कराया था! वे अपने परिवारको बहुत बार अिसी संबोधनसे पुकारते या मित्रोंके सामने अुसका अुल्लेख करते। बेचारे "Them" का छत्र आज अुठ गया!

लेकिन यह विचार अुन सबको सान्त्वना प्रदान करनेवाला सिद्ध हो कि अुनकी अिस हानिमें देशके असंख्य मित्र और मित्र-कुटुंब भागीदार हैं।

अपनी छोटीसी जिन्दगीका अंतिम बरस डेढ़ बरस अुन्होंने गांधीजीके जीवन-प्रसंगोंकी समय-समय पर ली हुअी फिल्मोंके समन्वय द्वारा तैयार की जा रही 'डॉक्यूमेन्टरी' जीवनकथाके सम्बन्धमें बम्बअीमें गांधी-स्मारक-निधिके आश्रयमें चलनेवाली प्रवृत्तिमें बिताया। जीवनमें स्थिरता आ जानेके बाद भी शरीरके साथ अपने ऋणानुबन्धमें भाअी चन्द्रशंकर स्वर्गीय किशोरलाल-भाअीके साथ होड़ लगानेवाले थे। वैसे ही दमियल और हृद दर्जेके कमजोर। लेकिन दुर्भाग्यसे अुनमें कमजोरोंका वह अविचारी जोश था, जो किशोरलालभाअीमें नहीं था। कमजोर और व्याधिग्रस्त शरीर होते हुअे भी दमके हमलोंका डटकर सामना करके हाथमें लिया हुआ काम पूरा करनेके लोभमें एफिड्रिन (धतूरा) की गोलियां, अैसी ही खतरनाक दवाओंकी भाप और दूसरी पेटेन्ट दवायें अुत्कट आग्रहपूर्वक ले लेकर अिस बुद्धिमान आदमीने अपने हृदयको बुरी तरह बिगाड़ लिया है, अैसा अुनकी अंतिम बीमारीमें निष्णात डाक्टरोंने निदान किया था।

अीश्वरकी अगम योजनामें आखिर तो आदमी अल्पज्ञ ही है। डाक्टरोंके स्पष्टीकरणका औचित्य कितना ही क्यों न हो, मनुष्यकी भूलों या कमजोरियोंका काजी बननेका मनुष्यका प्रयत्न व्यर्थ है। मनुष्य केवल सयानेपन और पागलपन, गुणों और दोषोंका पुंज बनकर ही जीता है और दोनोंकी कमाअी जीवनके खातेमें जमा कराकर अपनी अिस लोककी यात्रा पूरी करता है। सुसंगति-विसंगति भी जीवनकी वैसी ही अविभाज्य जोड़ी है, जैसी कि सुख-दुःख, यश-अपयश और हार-जीत। सारी दुनियाका यह अनुभव है कि बुद्धिमानसे बुद्धिमान माने जानेवाले मनुष्योंके जीवनमें भी कहीं न कहीं अेकाध कमी या दोष — अेकाध स्क्रू ढीला — होता ही है। मानव-जीवनकी अिस कमजोरीमें ही शायद अुसकी मानवताकी भव्यता और गौरव छिपा होता है।

परन्तु मनुष्यके दोष, कमजोरियां और अवगुण अुसके 'भस्मान्तं शरीरं' के साथ नष्ट हो जाते हैं और अपने गुणोंकी सुगन्ध और स्मृति वह अपने पीछे अपनी सन्तान और संसारके अुपकारके लिअे छोड़ जाता है।

महाबलेश्वर, १७-१०-'५३ स्वामी आनन्द
(गुजरातीसे)

भूदान-प्राप्ति और वितरण

क्रम	प्रदेश	कुल जमीन (ता०५-१०-'५३ तक)	भूमि-वितरण	
			अेकड़	परिवार
१.	आसाम	१,३४९		
२.	आंध्र	७,०९७		
३.	अुत्तर प्रदेश	५,११,४१४	२४,२६३	३,४५९
४.	अुत्कल	२८,५१४		
५.	कर्नाटक	१,१९७		
६.	केरल	६,५००		
७.	गुजरात	१६,७६५		
८.	तामिलनाड	१४,०००	२५५	
९.	दिल्ली	७,५६९		
१०.	पंजाब व पेप्सू	२,४३५		
११.	बंगाल	३५४		
१२.	बिहार	११,१२,३४३		
१३.	मध्यप्रदेश	५६,५३५	९२८	
१४.	मध्यभारत	५१,२२१		
१५.	महाराष्ट्र	८,९२२		
१६.	मैसूर	१,६४२		
१७.	राजस्थान	२,२०,०००		
१८.	विंध्यप्रदेश	३,४६७	१२५	
१९.	सौराष्ट्र	८,०००		
२०.	हिमाचल प्रदेश	१,३५०		
२१.	हैदराबाद (द०)	६६,५४३	९,९१०	२,११७
	कुल	२१,२७,२१७	३५,४८१	५,५७६

सूचना: प्रस्तुत विवरण प्रादेशिक समितियों द्वारा प्राप्त अधिकृत अहवालों परसे ही लिया गया है। यात्री-दलोंके पासके दान-पत्रोंका और वचनों आदिका समावेश प्रादेशिक समितियोंने अिनमें नहीं किया है। कुछ सूबोंके ताजे अहवाल भी अभी प्राप्त नहीं हुअे हैं।

(अक्तूबरके 'सर्वोदय' से)

कृष्णराज मेहता
दफ्तर-मंत्री
अ० भा० सर्व-सेवा-संघ, सेवाग्राम

www.vinoba.in

केक, क्रिकेट और कालर

नयी दिल्लीमें पिछली २४ सितम्बरको विभिन्न राज्योंके कृषि-मंत्रियोंकी अेक परिषद्का अुद्घाटन करते हुअे पंडित जवाहरलाल नेहरूने अेक बहुत महत्त्वपूर्ण भाषण दिया। सरकारी और गैर-सरकारी सभी जन-सेवकोंको अुस पर गौर करना चाहिये और विचार करना चाहिये। यहां हम अुसमें से कुछ अंश अुद्धृत करते हैं। (दी स्टेट्समेन, २६ सितम्बर, '५३) :

१. मंत्रियों या सरकारी अधिकारियों द्वारा की गयी नीतिकी घोषणाओंसे देशकी प्रगतिका माप नहीं लगाया जा सकता।

२. हम किसानोंको खेतीकी नयी और बेहतर पद्धतियां सिखाना चाहते हैं, और अुसके लिअे अिन परिषदोंका आयोजन करते हैं या तत्सम्बन्धी पुस्तिकायें छपवाते हैं। यह कैसा निरर्थक तमाशा है? मैं अिस विषय पर जितना सोचता हूं, हमारे काम करनेके अिस तरीकेके बारेमें मुझे अुतना ही अधिक ताज्जुब मालूम होता है; क्योंकि अिस सारे विचार-विमर्शके जरिये हम जिस साधारण जनको लाभ पहुंचाना चाहते हैं, वह तो अिस तसवीरमें कहीं आता ही नहीं है।

३. सबसे बड़ा सवाल यह है कि सरकारी अधिकारी अपने काममें हमारे देशकी सामान्य जनताके नजदीक पहुंचनेकी कोशिश करते हैं या नहीं। अगर मंत्री और अधिकारी जनताके अिन सवालों पर कोट, नेकटाअी और कालरसे सूचित होनेवाले विदेशी और हाकिमाना दृष्टिकोणसे ही देखते रहे, तो अुनके और जनताके बीचमें जिस समीपताका हम निर्माण करना चाहते हैं, वह कभी नहीं आ सकती।

४. आज तो अधिकारियों और साधारण जनताके बीचमें बहुत बड़ी खाअी है। अेक तो, अधिकारी सामान्य आदमीकी भाषा भी नहीं बोलते, जिसके कारण अुन्हें अपनी मेहनत और प्रयोगोंका फल दूसरों तक पहुंचाना मुश्किल होता है।

५. साधारण आदमी तक आप तब तक नहीं पहुंच सकते जब तक कि आप साधारण जनताके प्रति आपकी मनोवृत्तिमें, और अपनी वेश-भूषामें फर्क नहीं करते। सवाल अूपरी पहनावेमें फर्क करनेका अुतना नहीं है जितना मन और हृदयकी तब्दीलीका।

६. जाति-प्रथा भारतके विनाशका अेक बेड़ा कारण रही है। लेकिन आज हमारे यहां अेक नयी जाति अुठ खड़ी हुअी है — नेकटाअी, कालर और टोप पहननेवालोंकी।

प्रधानमंत्रीके अिन सहज और हार्दिक अुद्गारोंमें जो अमिट सत्य प्रगट हुआ है, अुससे कोअी भी स्वदेश-प्रेमी व्यक्ति अिनकार नहीं कर सकता। पंडित जवाहरलाल नेहरू आज छः सालसे हमारे संघीय राज्यकी नौका खेते आ रहे हैं। अितने दिनके बाद भी अगर अधिकारी और साधारण आदमीके बीचमें बड़ी खाअी मौजूद है, और हमारी साधारण जनतासे अपनेको विशेष मानने और अलग रखनेवाली अेक नयी जाति बन रही है, तो यह बहुत दुःख और चिन्ताका विषय है। जाहिर है कि हमारे सामाजिक और राजनीतिक ढांचेमें जरूर कहीं कोअी बड़ी खराबी है, तभी तो यह खेदजनक परिस्थिति पैदा हुअी है।

अिस सवाल पर हम थोड़ा विचार करें, तो मालूम होगा कि अिस 'बड़ी खाअी' और 'नयी जाति' के निर्माणके लिअे अगर कोअी अेक व्यक्ति जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, तो वह — हमें दुःख और आश्चर्यसे कहना पड़ता है — खुद हमारे प्रधानमंत्री ही हैं। समाजके अेक समृद्ध और संभ्रांत वर्गमें अेक अंग्रेज शिक्षककी देखरेखमें वे बड़े हुअे, ब्रिटिश स्कूलों और विश्व-विद्यालयोंमें अुनकी शिक्षा-दीक्षा हुअी; और अिस तरह वे ब्रिटिश जीवन-प्रणालीके बहुत सम्पूर्ण और सुसंस्कृत नमूना हैं। ब्रिटिश शासनके वे कट्टर शत्रु थे और आज भी हैं, लेकिन वे ब्रिटिश परम्पराओंके भक्त पुजारी हैं। बोलचालकी भाषामें कहें तो — अगरचे वे अंग्रेजी राजसे नफरत करते थे, लेकिन अंग्रेजियतके प्रेमी हैं। यही कारण है कि प्रधानमंत्रीके पद पर अितने लम्बे अरसे तक रहने पर भी, अुन्होंने अंग्रेजोंकी जमायी हुअी भारतकी सम्पूर्ण राज्य-व्यवस्थाको शासन, संरक्षण, अर्थ, अुद्योग, शिक्षण, न्याय आदि हरअेक क्षेत्रमें ज्योंका त्यों कायम रखा है, तथा विदेशियोंके आर्थिक हित भारतमें आज जितने मजबूत हैं, अुतने पहले कभी नहीं रहे। अिसका यह मतलब नहीं कि अुन्हें सामान्य जनसे प्रेम नहीं है, या अपने देशकी भलाअीका खयाल किसी तरह कम है। सच तो यह है कि श्री जवाहरलाल नेहरूसे ज्यादा निडर, निःस्वार्थ और सच्चा देशका कोअी दूसरा सेवक, अुसकी भलाअीका कोअी दूसरा रक्षक नहीं है। लेकिन वे तो अपना काम अपने ही ढंगसे कर सकते हैं। और अुनका ढंग अेक शब्दमें 'अंग्रेजियत' है। और यही कारण है कि देशमें अंग्रेजियत पर मुग्ध टोप, नेकटाअी और कालरका प्रेमी अेक विशेष वर्ग पैदा होता जा रहा है।

मैं चाहता हूं कि मेरा यह कथन गलत होता। लेकिन अुसके समर्थनमें हमें रोज-रोज अैसे दृढ़ प्रमाण मिलते रहते हैं कि अुसे स्वीकार किये बिना चारा नहीं है।

पिछली १५वीं अगस्तको राष्ट्रपति-भवनमें हुअे अेक समारोहमें प्रधानमंत्रीने तलवारसे स्वातंत्र्य-दिनकी केक काटनेकी विधि की। भारतके सामान्य जनकी भावनासे यह बात जितनी बेमेल थी, अुससे अधिक बेमेल दूसरी किसी बातकी कल्पना नहीं की जा सकती।

अुसके बाद अभी कुछ ही दिन हुअे, प्रधानमंत्री और अुप-राष्ट्रपतिकी टीमोंमें अेक क्रिकेट-मैचका आयोजन हुआ। क्रिकेट ब्रिटेनका अपना खास खेल है। तब अिसमें क्या आश्चर्य कि ब्रिटेनके मशहूर अखबार 'संडे टाअिम्स' ने अुसकी तारीफके पुल बांधे। अुसके लेखका कुछ हिस्सा देखिये :

> "भारत पर ब्रिटिश राज्यका जो गहरा प्रभाव पड़ा अुसके अनेक चिन्ह हैं — दिल्लीके मैदानमें खड़े बड़े-बड़े शाही भवन, अुत्तरसे दक्षिणको जोड़नेवाले हजारों मील लम्बे रेल-मार्ग या अंग्रेजी भाषा, जो हिन्दुस्तानके पढ़े-लिखे लोगोंकी आम जबान है; लेकिन ये सब अुस प्रभावकी वैसी घोषणा नहीं करते, जैसी कि दिल्लीमें आयोजित क्रिकेट-मैचकी यह आज आयी हुअी खबर।
>
> "प्रधानमंत्री मि० नेहरू और गंभीर प्रकृतिके सम्मान्य विद्वान् डॉ० राधाकृष्णन् पार्लमेंटरी क्रिकेट-मैचमें दो विरोधी दलोंका नेतृत्व करेंगे, यह खबर बाकी दुनियाको कुछ अजीब मालूम होगी, लेकिन ब्रिटेन और भारतके निवासियोंको वह पूरी तरह स्वाभाविक और प्रशंसनीय मालूम होगी।"

ब्रिटेनके लोगोंको वह जरूर प्रशंसनीय मालूम होगी। लेकिन भारतवासियोंको भी वह अैसी ही मालूम होगी, यह बात बिलकुल नहीं है; हां, अुन थोड़ेसे लोगोंको छोड़ दीजिये, जिन्होंने ब्रिटिश तौर-तरीका स्वीकार किया है, और अपनेको अुसके अनुरूप गढ़ा है। अुनके लिअे केक या क्रिकेटका मजा कालर पहननेके सिवा नहीं आता। नयी दिल्लीके रोममें आज यह स्थिति है कि लोगोंको (लन्दनके) रोमन लोगोंके व्यवहारकी नकल करनी पड़ती है। जब हिन्दुस्तानमें आज केक और क्रिकेटकी हवा चल रही है, तो कर्मचारियों और अधिकारियों पर 'टोप, नेकटाअी और कालर' पहननेका दोष लगाना व्यर्थ है, बल्कि अनुचित है। पण्डित नेहरूके अपने सहकारी मंत्री ही तो 'भारतके हित' में अिन और अैसी ही दूसरी चीजोंको लोगोंके व्यवहारकी वस्तुयें बताकर आयात करते हैं। जब अुनका आयात होता है, तो व्यवहार भी होना

www.vinoba.in

ही चाहिये।, सामान्य जनको न तो अुनकी रुचि है, और न अुसके पास अुनके लिअे पैसा ही हैं।

प्रधानमंत्रीका यह २४ सितम्बरका भाषण अुस अंतर्द्वन्द्वका बहुत बढ़िया सूचक है, जो आज हमारे शिक्षित वर्गके या हमारे शासक वर्गके लोगोंकी बुद्धि और हृदयके बीच चल रहा है। ज्यों-ज्यों दिन बीत रहे हैं, अुनकी बुद्धि और हृदयके बीचकी यह दूरी और बढ़ती जा रही है। और अुसके साथ शासकों और शासितोंके बीचकी खाअी ज्यादा चौड़ी होती जा रही है तथा कालरवालोंकी अिस नयी जातिके सदस्योंकी संख्या बढ़ती जाती है। अिस विषम स्थितिमें कोअी भी देश ज्यादा दिन तक नहीं रह सकता।

अिलाहाबाद, ६-१०-'५३ सुरेश रामभाअी

(अंग्रेजीसे)

हरिजनसेवक

२४ अक्तूबर १९५३

समानता और ट्रस्टीशिप

श्री म० प्र० ति० आचार्य बम्बअीसे लिखते हैं:

"ता० २९-८-'५३ के 'हरिजनसेवक' में छपी आपकी 'पूंजी अेक सामाजिक ट्रस्ट है' नामक टिप्पणीके संबंधमें मैं यह बताना चाहता हूं कि जब अेक आदमी २५ लाखकी पूंजी किसी अुद्योग-धंधेमें लगा सकता है और अुस पर कमसे कम २ लाख रुपये भी कमा सकता हो (हालांकि वह अिससे ज्यादा ही कमाना चाहता है), तब भी वह सामाजिक ट्रस्ट नहीं होगी। क्योंकि किसी व्यक्तिको अपनी लगाअी हुअी पूंजी और मालकी कुल ब्रिकीके अनुपातमें क्यों कमाना चाहिये, जब कि ज्यादातर लोग २५० रुपये माहवार भी नहीं कमाते और अुन्हें बड़े परिवारोंका भरण-पोषण करना पड़ता है? सामाजिक ट्रस्ट वह तभी कही जायगी, जब कि पूंजी लगानेवाले लोग अुतना ही कमायें जितना कि अेक मामूली कर्मचारी या मजदूर कमाता है, अुससे ज्यादा नहीं। यह कहना कि जो आदमी ज्यादा पूंजी लगा सकता है अुसे सामान्य नौकरों या कर्मचारियोंसे ज्यादा कमाना चाहिये, पूंजीवादको स्वीकार करना है न कि सामाजिक ट्रस्टीशिपको। जब कोअी पूंजी लगानेवाला अेक महल खड़ा करता है और खूब पैसा खर्च करके अपने मनकी तरंगें पूरी करता है, तब वह अुद्योग-धंधेमें लगाअी हुअी बड़ी पूंजीके बल पर दूसरे सब लोगोंको ये भारी खर्च चुकानेके लिअे मजबूर करता है। ये भारी खर्च कर्मचारियों और मजदूरोंके पाससे आते हैं, जिन्हें अिनके कारण अपनी क्रय-शक्तिसे हाथ धोने पड़ते हैं। यह सामाजिक ट्रस्टीशिप नहीं है। अगर सामाजिक ट्रस्टीशिपकी स्थापना करनी हो, तो पूंजी लगानेवालेको मामूली कर्मचारी या मजदूरसे ज्यादा पैसा नहीं मिलना चाहिये — भले अुसने कितनी ही बड़ी पूंजी क्यों न लगाअी हो।

"अगर कोअी आदमी (चूंकि अुसने किसी न किसी तरह पैसा कमा लिया है) बड़ी-बड़ी रकमें अुद्योग-धंधेमें लगाता है या बड़ी मात्रामें अपना माल बेचता है, तो वह अपने साज-सामान और ठाटबाटको बनाये रखनेके लिअे अपने लाखों-करोड़ों ग्राहकोंसे थोड़ा-थोड़ा पैसा वसूल करता है, और अपनी अधिक कमाअीको और ज्यादा शोषणके लिअे अुद्योग-धंधेमें लगानेके बाद भी कुछ पैसा बचा लेता है। यह अेक दुष्ट चक्र है। यह लाखों-करोड़ों लोगोंकी क्रय-शक्तिको नष्ट करना है, जिसके बाद वह खुद भी अपना माल नहीं बेच सकता।"

सिद्धान्तके रूपमें श्री आचार्यका सुझाव माननेमें मुझे कोअी आपत्ति नहीं है। क्योंकि मैं यह स्वीकार करता हूं, जैसा कि मैंने अुपरोक्त टिप्पणीमें लिखा था, कि "सारी पूंजी समाजकी पैदा की हुअी है। अिसलिअे अगर व्यक्तिगत लाभके लिअे और सामाजिक हितके खिलाफ अुसका अुपयोग किया जाय, तो वह सामाजिक अन्याय और पूंजीका दुरुपयोग ही होगा।" अिस सिद्धान्तके अनुसार यह याद रखना चाहिये कि वे दो लाख रुपये भी, जो कोअी सामाजिक आर्थिक रचना पूंजी लगानेवालेको कमानेकी छूट दे सकती है, ट्रस्ट ही माने जायंगे; वे खुदके लाभके लिअे और व्यक्तगत तरंगें सन्तुष्ट करनेके लिअे नहीं हैं। अैसा करना ट्रस्टीशिपके खिलाफ होगा। कमाये हुअे दो लाख रुपये बढ़े हुअे ट्रस्टके ही पैसे हैं, अतिरिक्त खानगी कमाअी नहीं — जैसा कि, मुझे डर है, श्री आचार्य मानते मालूम होते हैं। कोअी व्यक्ति अधिक अूंची आमदनी या कमाअी करता है — और यह तो निश्चित है कि विभिन्न लोगोंकी कमाअीमें फर्क रहेगा, यद्यपि जैसे-जैसे हम ट्रस्टीशिपके सिद्धान्त पर नअी रचना खड़ी करते जायंगे वैसे-वैसे यह फर्क कम और ज्यादा कम होता जाना चाहिये — अुसका यह मतलब नहीं कि अुस पर कमानेवालेका अिस अर्थमें अधिकार है कि वह अुसका दुरुपयोग कर सकता है या अपने आनन्द या सन्तोषके लिअे अुसे अुड़ा सकता है। अैसा करना ट्रस्टीशिपके सिद्धान्तके खिलाफ होगा। अधिक आमदनी अतिरिक्त ट्रस्ट ही है, जिसके साथ अतिरिक्त जिम्मेदारी और सामाजिक या नैतिक कर्तव्य जुड़ा होता है।

अिसलिअे यह प्रश्न कि अेक आदमीको दूसरेसे ज्यादा क्यों कमाना चाहिये, अलग बात हो जाती है। वह समानता कायम करनेकी बात है, अेक नया विचार है, यद्यपि अुस पर हमें ध्यान देना चाहिये। ट्रस्टीशिपका सिद्धान्त पूंजीवाद या साम्यवादकी तरह किसी 'वाद' का भिन्न रूप या प्रतियोगी नहीं है। वह सामाजिक नीतिका बुनियादी सिद्धान्त है; वह व्यक्तिकी सामाजिक और व्यक्तिगत स्थितिकी व्याख्या करता है। वह यह कहकर खानगी सम्पत्तिके विचारको परिष्कृत बनाता है कि किसी व्यक्तिके पास समाजमें तथाकथित संपत्ति या मालिकीके नाते जो कुछ भी है, वह दरअसल अुसकी व्यक्तिगत चीज नहीं है, बल्कि समाज द्वारा अुसे सौंपा हुआ अेक ट्रस्ट या अमानत है; अिसलिअे वह केवल अपनी व्यक्तिगत सनक या सुखके लिअे अुसका अुपयोग नहीं कर सकता। ज्यादासे ज्यादा अुसमें से वह अितना हिस्सा ले सकता है, जितना अुसके जीवन-निर्वाहके लिअे जरूरी हो, अिससे ज्यादा नहीं। वर्ना वह ट्रस्टके पैसेका दुरुपयोग होगा। अिसलिअे ट्रस्टीशिप जो समानता अिस तरह कुदरती तौर पर सिद्ध करेगी, वह रुपया-आना-पाअीमें नहीं, बल्कि अिस सूत्रके आधार पर होगी — हरअेकको अुसकी जरूरतके अनुसार मिलना चाहिये, ज्यादा नहीं। अिसलिअे यह बात अप्रस्तुत हो जाती है कि "जो आदमी ज्यादा पूंजी लगा सकता है, अुसे सामान्य नौकरों या कर्मचारियोंसे ज्यादा कमाना चाहिये — यह कहना पूंजीवादको स्वीकार करना है न कि ट्रस्टीशिपको।" क्योंकि ज्यादा बड़ी कमाअी या अुद्योग-धंधेमें लगाअी हुअी ज्यादा बड़ी रकमें व्यक्तिगत संपत्ति नहीं हैं। बल्कि, ज्यादा बढ़ा हुआ ट्रस्ट ही है। यह मैं स्वीकार करता हूं कि समाज या राज्यको अैसी कोअी व्यवस्था खड़ी करनी चाहिये, जिससे आजकी भयंकर असमानतायें दूर हो जायं। अिसे साधनेका आधार है ट्रस्टीशिपका सिद्धान्त, जो कहता है कि दौलतकी मालिकी और

www.vinoba.in

अुसके अुपयोगका कानूनी नियमन होना चाहिये। लेकिन अैसी साम्ययोगी व्यवस्थामें भी ट्रस्टीशिपके सिद्धान्तकी जरूरत है; क्योंकि तब भी वह कहता है कि आदमी जो कुछ कमाता है, वह सामाजिक ट्रस्ट है। अुसका अुपयोग व्यक्तिगत सनक पूरी करनेमें या समाजविरोधी स्वार्थकी सिद्धिमें नहीं किया जा सकता। यहां यह याद रखना चाहिये कि केवल दौलतमंद ही अपनी कमाअीका दुरुपयोग नहीं करते। अेक छोटी कमाअीवाला मामूली मजदूर भी अपना ट्रस्टीशिपका फर्ज अदा करनेमें गलती कर सकता है, भले दौलतमंदसे अुसकी कोअी समानता न हो।

१०-१०-'५३ मगनभाअी देसाअी

(अंग्रेजीसे)

श्री चन्द्रशंकर शुक्ल

भाअी चन्द्रशंकरके लिअे मुझे ये पंक्तियां लिखनी पड़ेंगी, अिसकी स्वप्नमें भी कल्पना नहीं थी। वे अुम्रमें मुझसे छोटे थे। सन् १९२३–२४ से लगभग १०–१२ बरस तक मैंने और अुन्होंने सत्याग्रह आश्रम, साबरमती, और विद्यापीठमें साथ साथ काम किया था। वे ५२ वर्षकी आयुमें ही चले गये, अिससे बड़ा दुःख होता है। दिवंगतकी पत्नी श्रीमती रामुबहन, अुनकी दो लड़कियों तथा अुनके भाअी-बहनों और वृद्ध माताजीके लिअे मैं हार्दिक सहानुभूति और समवेदना प्रेषित करता हूं।

गांधीजीने १९२१ में स्कूल-कॉलेजोंके असहकारकी घोषणा की। अुसके कारण अंग्रेजी शिक्षाका बहिष्कार करनेवाले नौजवानोंमें श्री चन्द्रशंकर भी थे। अुस समय वे गुजरात कॉलेजमें अिन्टरकी पढ़ाअी कर रहे थे। अुसे छोड़कर वे विद्यापीठमें आये। वहां अुन्हें श्री काकासाहब, स्व० श्री महादेवभाअी तथा स्वामी आनन्दका साथ मिला। अुसकी वजहसे अुन्होंने अपनी साहित्यिक शक्तिका खूब विकास किया। अिस समागमके आनन्दमें अुन्होंने स्नातकका विधिवत् अध्ययन छोड़कर श्री काकासाहबका मंत्रीपद स्वीकार किया और बरसों तक वह काम किया। १९३३–३४ में 'हरिजन' पत्र पूनामें शुरू हुअे; अुनका सारा कामकाज वे पूनामें रहकर संभालते थे। अिस बीच अुन्होंने 'हरिजनबंधु' के सम्पादकका काम भी किया। १९४२ में ये पत्र अहमदाबाद आ गये; अुनके साथ वे भी अहमदाबाद आये। अेकाध साल बाद वे अिस कामसे मुक्त हो गये और अुन्होंने अपना सारा समय लेखन कार्यमें बिताया। वे कहानी या अुपन्यास-लेखक नहीं थे; बल्कि सफल अनुवादक और अूंचे दर्जेके निबन्ध-लेखक थे। अुनकी लेखनकला 'सीताहरण' नामक पुस्तकमें देखनेको मिलती है, जिसे आज अनेक शालाओंमें विद्यार्थी पढ़ते हैं। आर्यविद्याके वे प्रेमी थे; अुसका अुन्होंने गहरा अध्ययन किया था। अुस सम्बन्धमें अुन्होंने हमें डॉ० राधाकृष्णनके कुछ ग्रन्थ गुजरातीमें दिये हैं। गांधीजीके संस्मरणोंका अच्छा सम्पादन करके अुन्होंने दो-अेक अुत्तम ग्रन्थ दुनियाको भेंट किये हैं। पिछले कुछ बरसोंसे वे गांधी-स्मारक-निधिकी ओरसे तैयार हो रही गांधी-फिल्ममें काम करते थे और अुस सिलसिलेमें बम्बअी रहते थे। वे पिछले करीब २२–२३ सालसे दमेके रोगसे पीड़ित थे और अन्तमें अुसीके भोग बने। कुछ दिन पहले अेकाअेक रोगने अुन पर हमला किया, जिसके कारण अुन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा। वहां कुछ दिनके अिलाजके बाद अुनका अवसान हो गया। अीश्वर अुन्हें शांति दे। भारतकी आजादीके लिअे मरने-मिटनेकी तयारीसे बाहर निकल पड़नेवाले गुजरातके नौजवानोंमें भाअी चन्द्रशंकरका नाम सबको हमेशा याद रहेगा। प्रभु अुनके कुटुम्बीजनोंको अुनके वियोगका दुःख सहनेकी शक्ति और धीरज दे।

२०–१०–'५३ मगनभाअी देसाअी

(गुजरातीसे)

टीका अनिवार्य किस लिअे?

बारडोली तालुकेके अेक गांवमें होमियोपैथीका धर्मादा दवाखाना चलानेवाले अेक भाअीने मुझे लम्बा पत्र लिखा है। वह महीने भरसे मेरे पास पड़ा है। अुसमें अेक शिकायत की गअी है, जो सबके आगे पेश करने जैसी है। वे लिखते हैं:

"आजकल हमारे यहां अेक महत्त्वका सवाल खड़ा हुआ है। आठेक दिन पहले अेक हलपति* परिवारमें दो आदमियोंकी हैजे से मृत्यु हो गअी। अुसी परिवारमें फिर तीसरा केस हुआ। दो आदमियोंकी मृत्यु होनेके बाद जब तीसरे केसकी हमें खबर मिली, तो हम तुरन्त ही डॉक्टरके साथ वहां दौड़ गये और मृत्युशय्या पर पड़ा हुआ रोगी होमियोपैथीके अिलाजसे तुरन्त ही बच गया। हम लोगोंने दवाखानेकी ओरसे हैजेकी दवाकी हजारों पुड़ियां मुफ्तमें बांटीं। लगभग पांच हजार लोगोंको ये पुड़ियां दी गअीं और अिस प्रकार हैजेके अुपद्रव पर काबू पाया गया।

"सरकारको अिस बातकी खबर होते ही अुसने तुरन्त हमारे गांवको कॉलेरा-ग्रस्त क्षेत्र घोषित कर दिया और अनिवार्य टीका लगानेकी सूचना की गअी; साथ ही यह भी बताया गया कि जो लोग ये टीके न लगायेंगे, अुन्हें रु० १,००० का जुर्माना या छः महीनेकी कैदकी सजा होगी। ग्रामीण जनताको अिस प्रकार कानूनकी पिस्तोल दिखाकर डराया-धमकाया गया। गांवके पुलिस पटेलसे लेकर मामलतदार साहब तकने स्वयं यहां आकर और लोगोंको प्रत्यक्ष बुलाकर अुपर्युक्त कानूनकी धमकी दी। अिसके सिवा, प्राथमिक शालाके लड़के-लड़कियोंको भी जबरदस्ती टीके दिये जा रहे हैं। अिस प्रकार सारे गांवमें मामलतदार और पुलिस पटेलने हाहाकार फैलाकर, लोगोंको डराकर टीके लगानेका प्रयत्न जारी रखा है।

"सरकारका कर्तव्य है कि जब अिस प्रकारके छूतवाले रोग पैदा हों, तब वह जल्दीसे जल्दी कोअी कदम अुठाये; और यह बिलकुल ठीक है कि अुसने अैसा कदम अुठाया। लेकिन जिन लोगोंको अिस प्रकारके टीकोंमें श्रद्धा न हो — जिन्हें अिन टीकोंमें धार्मिक आपत्ति हो — जो शुद्ध बुद्धिसे अिस टीकेका विरोध करते हों, अुन्हें हैजा रोकनेके लिअे होमियोपैथीकी दवा लेनेकी छूट होनी चाहिये। अलबत्ता, दूसरेके हितकी खातिर भी हरअेकको दवा तो लेनी ही चाहिये। लेकिन कानून द्वारा टीकेको अनिवार्य बनानेमें हमारा विश्वास नहीं है।"

ये भाअी लिखते हैं कि अुन्होंने अिस पत्रकी नकल स्वास्थ्य-विभागके मंत्रीको भी भेजी है। अुन्होंने अपने पत्रमें जो सवाल अुठाया है, वह कोअी नया नहीं है। ब्रिटेनमें पचास वर्ष पूर्व यह सवाल चेचकके टीकेके बारेमें अुठा था और वहां अुसे अैच्छिक बना दिया गया है। टीकेसे रोग रुकते हैं, अिस बारेमें डॉक्टरोंके भिन्न-भिन्न मत हैं; वह अेकदम रामबाण अुपाय तो हरगिज नहीं है। अिसके सिवा, कुछ टीकोंकी लसी बनानेमें पशुओं पर अत्याचार करना पड़ता है; अुसमें प्राणिज पदार्थोंका भी अुपयोग होता है, जिस पर कुछ लोगोंको आपत्ति होती है। लेकिन लोगोंको अिस बारेमें अेक दूसरी आपत्ति भी है, और वह है अुन पर गुजरनेवाले दुःखोंकी। अुदाहरणके लिअे, हैजेका टीका लगानेसे अेकदम जोरका बुखार आता है। फिर टीकेकी जगह पक भी जाती है। सामूहिक रूपसे लगनेवाले टीकोंमें जरूरी शुद्धि और सफाअी भी नहीं रहती।

* गुजरातकी अेक पिछड़ी हुअी खेती करनेवाली जाति।

www.vinoba.in

टीकेका जो 'डोज़' दो वारमें देना होता है, अुसे अेक ही वारमें दे देनेके कारण भी तकलीफ होनेकी बात सुनी जाती है। यदि यह बात सच हो तो अुस पर विचार किया जाना चाहिये। तब फिर अिसमें जबरदस्ती नहीं हो सकती। लोग गरीब हों तब तो खास तौरसे अिसका ध्यान रखा जाना चाहिये, क्योंकि टीकेके बादकी तकलीफोंसे वे अधिक परेशान होते हैं।

सरकार किसी विशेष 'पैथी'—पद्धति पर ही शास्त्रीयताकी मुहर न लगाये; बल्कि अिलाजकी दूसरी पद्धतियोंको भी बढ़ावा देनेकी दृष्टि रखे, खासकरके भारत जैसे गरीब देशमें।

अिसका यह अर्थ न किया जाय कि अैसी बीमारियोंको रोकनेके लिअे कोअी कदम न अुठाया जाय; लेकिन अुसमें विवेक रखनेकी जरूरत है और अनिवार्य जबरदस्ती न होनी चाहिये। दीखनेमें लम्बा लगनेके बावजूद सही अुपाय यह है कि अैसे सरकारी प्रयत्न बढ़ने चाहियें, जिनसे स्वच्छता बढ़े और लोगोंकी पानी आदिकी जरूरतें सब जगह अच्छी तरह पूरी होती रहें।

(गुजरातीसे) मगनभाअी देसाअी

आर्थिक योजना और स्वदेशी

गांधी-जयन्ती सप्ताहकी वजहसे ता० ६-१०-'५३ को मेरा बड़ोदा जाना हुआ। अुस दिन वहां श्री वैकुण्ठभाअी मेहताके शुभ हाथों न्याय-मंदिरके हॉलमें गृह-अुद्योगोंकी जो स्वदेशी प्रदर्शनी खोली गअी वह देखनेको मिली। अुस प्रदर्शनीको देखकर किसीको भी आसानीसे यह समझमें आ सकता है कि अगर हम हाथ-कारीगरीके मालको बढ़ावा दें यानी अुसका अुपयोग करें, तो आज भी लोगोंको काफी काम मिल सकता है और बेकारी कम हो सकती है। अुस प्रदर्शनी परसे यह साफ दीखता था कि हमारी आर्थिक अुन्नति करनेकी सुप्त शक्ति कितनी अपार है। वहां खादी-कामकी सारी क्रियाअें बताअी जाती थीं। हरिजन भाअियोंकी बांससे बनाअी हुअी टोकरे-टोकरियां, पंखे वगैरा अनेक चीजें वहां रखी गअी थीं। धातुओं और दूसरे कच्चे मालसे मशीनों द्वारा बननेवाला सस्ता माल ज्यादा फेशनेबल होता जाता है, अिसलिअे हमारे अिन गरीब पड़ोसियोंकी रोटी छिन गअी है। अैसा करनेका हमें क्या अधिकार है? अुसमें भला कौनसा अर्थशास्त्र है? महिला-मंडल अपने सिलाअी, जिल्दसाजी, छपाअी और कसीदेका काम, खाद्य-पदार्थों वगैराके जो छोटे-छोटे हाथ-अुद्योग चलाते हैं, अनकी चीजें भी वहां रखी गअी थीं। चमड़ेके अुद्योगके नमूने भी रखे गये थे। हमारे मोची भाअी घर बैठे जो तरह-तरहके जूते, चप्पल, पाकिट वगैरा बनाते हैं, वे भी वहां थे। अुन्होंने मुझे दो महीने पूर्व अुनके मंडल द्वारा पास किया हुआ प्रस्ताव दिया और साथ ही श्री किशोरलालभाअीके १२ जनवरी, १९५२ के 'हरिजन-बंधु' में लिखे लेखकी नकल भी दी। अुस प्रस्तावका मुख्य अंश यहां देने जैसा है:

> "भारतमें गृह-अुद्योगके रूपमें मोचियोंका जूते-चप्पल आदि बनाने और सीनेका धंधा पीढ़ियोंसे चला आ रहा है। और अिस गृह-अुद्योगके द्वारा हजारों-लाखों परिवारोंको रोजी मिलती है और अुनका गुजर-बसर होता है। कितने ही बरसोंसे बाटा और फ्लेक्सके कारखानों तथा अन्य कारखानोंमें जूते-चप्पल बनानेका काम होता है। अिसके अलावा, अभी हालमें अुन कारखानोंमें प्लास्टिककी चीजें—जूते, चप्पल, पाकिट आदि—भी बनने लगी हैं। अैसे कारखानोंमें अिन चीजोंका अुत्पादन होनेसे मोची भाअियोंके गृह-अुद्योगको भारी धक्का पहुंचा है। अिसलिअे श्री क्षत्रिय मोची मंडलके तत्त्वावधानमें आयोजित बड़ोदाके मोची भाअियोंकी यह सभा भारत-सरकार और बम्बअी-सरकारसे प्रार्थना करती है कि वे अैसे कारखानोंको जल्दीसे जल्दी बन्द करवा दें। साथ ही यह सभा बड़ोदेकी और समस्त गुजरातकी जनतासे अनुरोध करती है कि वह कारखानोंमें बनी चीजोंके बजाय हाथ-अुद्योगसे बननेवाले जूते-चप्पल आदि काममें ले। अिसी तरह दूसरे अुद्योगोंमें कारखानेके तैयार सीये हुअे कपड़े आदि और दूसरी कारखानोंकी बनी चीजोंका अुपयोग न करके हाथ-अुद्योगकी चीजें और हाथ-सिलाअीके कपड़े पहनने तथा काममें लेनेका आग्रह करती है।"

दुःखकी बात यह है कि हमारे देशके आर्थिक योजना बनानेवाले लोग यह तो जरूर कहते हैं कि स्वदेशीका मंत्र सही है। लेकिन वे जो योजनाअें बनाते हैं, अुनकी बुनियाद कुछ दूसरी ही होती है; और वे अैसा मानते हैं कि स्वदेशी तथा गृह और ग्राम-अुद्योगोंकी ओर कुछ हद तक दया और दानकी वृत्ति दिखाना काफी है। अिसका कारण सच्ची श्रद्धाका अभाव हो या और कुछ, हमें अिससे कोअी मतलब नहीं है। हमारे लिअे अितना ही काफी है कि अब वे कहने लगे हैं कि बेकारी-निवारण और प्रजाको पूरा काम देना आर्थिक योजनाकी सच्ची बुनियाद होनी चाहिये। यह करना हो तो स्वदेशी मालको बढ़ावा देनेवाली आर्थिक योजनायें, आयात-निर्यात-नीति, जकात-पद्धति और नियंत्रणकी नीति अपनानी चाहिये। अैसा करनेसे विदेशी माल और अुसके व्यापार पर पैसेवाले बने हुअे धंधे-रोजगारवाले वर्गोंको थोड़ा अिधर-अुधर हटकर नवरचनामें अपना स्थान बनाना पड़ेगा। लेकिन तब तो यह बात अनिवार्य मानी जानी चाहिये और देशके गरीबों तथा सच्चे स्वराज्यके हितमें अिन वर्गोंको राजीखुशीसे नअी परिस्थितिके अनुकूल बन जाना चाहिये। और सरकारको अिसी बुनियाद पर अपनी नीति और कायदे-कानून बनाने चाहिये।

यह सब होने लगे—और अैसा किये सिवा दूसरा कोअी अुपाय नहीं है यह हमें अब समझ लेना चाहिये—तब तक हम हाथ पर हाथ धरे प्रतीक्षामें बैठे नहीं रह सकते। आज भी गांवके गृह-अुद्योगोंसे बनी हुअी लोगोंके रोजमर्राके अुपयोगकी बहुतसी चीजें मिल सकती हैं। अुन्हें ये चीजें खरीदना शुरू करना चाहिये; अुसमें कला, देशप्रेम और देशकी सच्ची समृद्धि देखना सीखना चाहिये; और दीखनेमें खूबसूरत मगर दरिद्रताको जन्म देनेवाले विदेशी मालसे बचना चाहिये। यह समझना चाहिये कि अिस मालमें जो सस्ताअी है, वह हमें देशव्यापी बेकारी और भुखमरीका शिकार बना रही है।

अैसा न हुआ तो बहुतसे लोग बिना धंधे-रोजगारके मरेंगे और थोड़े-बहुत जो अुनकी रोटी छीनकर दौलतमंद बनेंगे, वे अुनकी अीर्ष्या और क्रोधके ही पात्र बनेंगे। अिस स्थितिको भला कौन रोक सकेगा? अिसके अुपायके रूपमें अगर सरकार बेकार लोगोंको दबाये, तो अुसे लोकतंत्रात्मक सरकार मिटकर थोड़ेसे धनवान लोगोंकी ही सरकार बनना पड़ेगा और मुख्यतः अुन्हींकी सेवा करनी पड़ेगी। लेकिन यह तो हो ही नहीं सकता। अिसलिअे धनवान लोगों और सरकारको समझना चाहिये कि कमसे कम लोकशाहीकी रक्षाके लिअे ही समय रहते ग्राम और गृह-अुद्योगों तथा स्वदेशीकी बुनियाद पर नअी अर्थ-रचनाका आरम्भ कर दिया जाय। अिसी मार्गसे बेकारी-निवारण, भुखमरीका नाश और काम-धंधे तथा कारीगरीकी वृद्धि हो सकेगी। समय रहते अिस नीतिके अनुसार फिरसे योजनाओं पर विचार किया जाय तो ठीक होगा। अब अगले वर्षोंके लिअे राज्य और प्रजाके सम्मुख यह काम मुख्य रूपसे आकर खड़ा होता है।

८-१०-'५३ मगनभाअी देसाअी

(गुजरातीसे)

www.vinoba.in

भूदान-आन्दोलनमें अुठनेवाले प्रश्न

अैसे सम्मेलनोंका अुद्देश्य यह होना चाहिये कि अुसमें शांतिके साथ विचार-विनिमय हो। अिसलिअे होना यह चाहिये कि अेक ही दिनमें काम खतम करके चले जानेकी योजना नं रहे, बल्कि अेकाध रोज और भी देनेकी तैयारी हो। लोग ज्यादा बोलते हैं, तो हम सब सुन लें, क्योंकि हरअेकके विचारमें कुछ विशेषता होती है। अिसलिअे अुसे हम समयका क्षय न समझें।

बेदखलीका प्रश्न

बेदखलीके सवाल पर श्री जयप्रकाशजीने अपने विचार प्रकट किये।* हम यह मानते हैं कि भूदान-कार्यकर्ताओंको अैसे किसानोंकी अवश्य सहायता करनी चाहिये। किन्तु हमारी अेक मर्यादा होती है। श्री जयप्रकाशजीके सवालके बारेमें तो हमने काशीमें ही यह स्पष्ट कर दिया था कि जिसको बेदखल कर दिया गया है और जिसको जमीनके सिवा अन्य कोअी चारा नहीं है, अुसको तो किसी भी हालतमें अपनी जमीन छोड़नी ही नहीं चाहिये। अुस बातको मैं अब भी दोहराता हूं। संग्रामके स्थान पर सिपाहीको अपना धैर्य अवश्य बतलाना चाहिये। लेकिन अकसर होता यह है कि अुसको राजनैतिक स्वरूप मिलता है। राजनैतिक दल अुसका लाभ अुठाना चाहते हैं। अिसलिअे अैसा कोअी आन्दोलन न हो। हरेक आदमीको अपना समय-प्राप्त कर्तव्य करना चाहिये और अुस पर डटे रहना चाहिये। परन्तु डटे रहनेका मतलब यह नहीं है कि अुसे क्षुब्ध होना है। मानसिक हिंसा भी न हो, क्योंकि हिंसाका मिश्रण होगा तो वह हारेगा।

बिहारमें जब यह सवाल अुठा, तो मैंने किसानोंको बेदखल करनेवाले जमींदारोंसे प्रत्यक्ष मिलकर कहा कि अुस जमीन पर किसानका हक है या नहीं, अिस गहराअीमें मैं नहीं जाना चाहता, क्योंकि अुसके लिअे सच्चा न्याय सिर्फ परमेश्वर ही कर सकता है, मनुष्य नहीं। पर मैं अितना जानता हूं कि बेदखल हो जानेसे किसानकी अुपजीविकाका फिर कोअी साधन बाकी नहीं रह जाता। अिसलिअे कम-से-कम आधी जमीन तो आप अुसे जोतनेके लिअे दे दें। जमींदारोंने यह बात मान ली।

कड़ी रचनाकी मानसिक तैयारी

श्री जयप्रकाशजीने यह कहा कि बड़े जमींदार और बड़े काश्तकार जमीनका अुचित हिस्सा दानमें नहीं देते। यह सही है। लेकिन जब तक वे अपना पूरा हिस्सा नहीं देते, तब तक हमें समाधान भी नहीं होगा। आजकी ही मृदु-मधुर रचना आखिरी फैसलेके समय नहीं चलेगी। शायद हमें अिससे कड़ी रचना करनी पड़ेगी। अिसलिअे हमें मानसिक तैयारी करनी चाहिये।

* आपने कहा कि बेदखलीके बारेमें मेरे पास कुछ खत आये हैं। बलियामें जोरोंसे बेदखलियां हो रही हैं। अफसर मालिकोंके साथ हैं। अिस प्रश्नका अेक दूसरा पहलू भी है। अुसे हम समझ लें। अगर मेरी जमीन छीन ली तो मेरे लिअे क्या रास्ता होगा? बादमें क्रांति होगी तब हमें जमीन मिलेगी, ये बातें ठीक हैं; लेकिन अुससे मेरी जो जमीन आज जा रही है, अुसके लिअे तो कोअी अुपाय नहीं है।

अदालतोंमें जानेसे भी काम नहीं बनेगा, क्योंकि अदालतोंमें वे किसान टिक नहीं सकेंगे। अुनके पास झगड़नेके लिअे काफी पैसा नहीं है। अिसलिअे वह रास्ता हमें छोड़ना ही पड़ता है।

अैसी परिस्थितिमें वे अपने आधार पर अपना संगठन बनाना चाहते हैं। वे अगर हिंसाके रास्ते जाते हैं, तो हम अुन्हें जरूर रोकें। लेकिन शांतिमय तरीकेसे अगर वे अपने अधिकारके लिअे झगड़ेंगे, तो अुनकी सहायता हम किस तरहसे करेंगे? अिस पर आपको सोचना चाहिये।

रंकाकी मिसाल

जब रंकाके राजाने हमें कहा कि आप जितना चाहें अुतना दान हम करेंगे, तो अगर हम चाहते तो विश्वामित्रकी तरह अुनकी सत्त्वपरीक्षा भी कर सकते थे। लेकिन हमने अुनकी सारी पड़ती जमीन और काश्तका छठा हिस्सा लिया। अुन्होंने छठे हिस्सेसे भी ज्यादा दिया। हमने अुसे 'पूर्ण दान' की पदवी दे दी। परन्तु अिस पर श्री गद्रेजीने कहा कि आपने यह गलती की। राजासाहबके लिअे केवल बीस ही अेकड़ भूमि रखनी थी और बाकी सब जमीन भूदान-यज्ञमें शामिल कर लेनी चाहिये थी। हमने अुनको लिखा कि यह तो यज्ञ है। यज्ञ यानी नित्यकर्म। आज हमने अुनसे जमीन मांगी अिसका मतलब यह तो नहीं है कि आगे अुनसे नहीं मांगेंगे।

पूंजीपतियोंका प्रश्न

पूंजीपतियोंके बारेमें अभी श्री जयप्रकाशजीने सवाल अुठाया था। हमारे विचार अिस बारेमें साफ हैं। जमीनके बारेमें तो कुछ दिक्कतें भी हैं, पर सम्पत्तिके बारेमें हम यह मानते हैं कि सम्पत्ति बड़ी भारी विपत्ति है, संपत्ति बढ़ना तो अेक रोग है। जिस तरह 'हाथी-पांव' के रोगमें आदमीका पांव बढ़कर वह मोटा हो जाता है, अुसी तरह वित्तका भी है। अीसाने कहा है कि जहां 'वित्त' वहां 'चित्त'। अिसलिअे जिनके पास वित्त है, अुन पर हमें दया आती है और दयाकुल होकर हम अुन्हें कहते हैं कि अिस लोभको आप छोड़ो।

डॉक्टर जिस तरह ज्यादा मेदवाले आदमीको कहता है कि घी-शक्करका मोह छोड़ दो, अुसी तरह पैसेवालोंको पैसोंका मोह छोड़नेके लिअे हम कहते हैं। अगर मेदवाला आदमी घी-शक्करका मोह न छोड़ेगा, तो अिसका मतलब है अुसे जीना प्रिय नहीं है, बल्कि मरना प्रिय है। यही बात सम्पत्तिके बारेमें भी है। हमें अपरिग्रहको समाजकी बुनियाद बनाना है, लोगोंको अपरिग्रहकी शक्ति समझाना है। आज तक लोग अपरिग्रहको केवल अेक अच्छे गुणके तौर पर मानते आये हैं। लेकिन अुसमें शक्ति भी है, अिसका परिचय हमें अुनको कराना है। लोगोंने अभी यह नहीं समझा कि समाजको पैसा देनेका मतलब अुसे अच्छी बैंकमें रखना होता है।

षष्ठांश केवल पहली किस्त

लोगोंसे हम छठा हिस्सा मांगते हैं, तो लोग पूछते हैं, क्या बाकी पर अुन्हींका हक है? हम कहते हैं कि भाअी, हम अुनसे षष्ठांश मांगते हैं, तो अिसका मतलब है हमने अुनकी पूरी संपत्ति परसे ही अुनका हक छुड़ाया है और सिर्फ पहली किस्तके तौर पर अेक-बटा छः मांगते हैं।

कल और आजका फर्क

कार्यकर्ताओंकी कमीकी बात यहां कही गअी। असहयोग-आन्दोलनमें जिस तरह हजारोंकी तादादमें कार्यकर्ता आते थे, वैसे अिस आन्दोलनमें नहीं आते अैसा लोग कहते हैं। हमें यह देखना आवश्यक है कि अुस आन्दोलनमें और अिस आन्दोलनमें काफी फर्क है। जब राष्ट्रने असहयोग-आन्दोलन छेड़ा था, तब सरकारी नौकर देशद्रोही वर्गमें शामिल हो गये थे। स्वातंत्र्य-प्राप्तिके बाद सरकारी नौकर आज देशभक्त बन गये हैं। सरकारी नौकर आज जो काम करता है, वह देशभक्तिका ही काम है। अिसलिअे हरेक व्यक्ति यह सोचता है कि जहां देशभक्ति भी होती है और साथ-साथ सांसारिक हालत भी सुधरती है, वहीं क्यों न जायं?

अब परिंदे होंगे, पत्ते नहीं

फिर, अैसे आन्दोलनके समय तो कोअी भी अुसमें शामिल हो जाता है, जिस तरह कि जोरकी हवामें केवल परिंदे ही नहीं, पत्ते भी अुड़ते हैं। पर अब तो केवल जिनकी वैराग्यकी प्रवृत्ति है, अैसे ही कार्यकर्ता अिस आन्दोलनमें आयेंगे। केवल

www.vinoba.in

परिंदे ही अब अुड़ सकते हैं। अितना कम वेतन लेकर काम करनेवाले लोग अब कम ही मिलेंगे, क्योंकि कुछ लोगोंको अुस कठिनाअीमें से गुजरना संभव नहीं होता।

हमको तो अब नये कार्यकर्ता बनाना चाहिये और अुसके लिअे नअी शिक्षण-योजना भी बनानी चाहिये। हमें ज्ञान, श्रद्धा और त्याग करनेवाले कार्यकर्ता बढ़ाने चाहिये। तीस लाख रुपयेकी खादी पैदा करनेके लिअे आज पांच सौ कार्यकर्ता नियुक्त किये गये हैं, तो तीस लाख अेकड़ जमीन प्राप्त करनेके लिअे और अुसके बंटवारेके लिअे कितने कार्यकर्ता लगेंगे, यही सोचिये।*

विनोबा

आन्ध्र सफल हो !

अिस महीनेकी पहली तारीखको आन्ध्रने भारतीय संघके नये राज्यके रूपमें जन्म लिया है। अीश्वर करे वह भारतीय परिवारके सुखी सदस्यके नाते अपना विकास और अुन्नति करे। आन्ध्र-जन लम्बे समयसे जिस बड़ी और कठिन जिम्मेदारीको अपने कंधों पर लेनेकी अभिलाषा रखते थे और जो अीश्वर-कृपासे अब स्वतंत्र भारतमें अुनके हाथमें आअी है, अुसे भलीभांति निबाहनेकी भगवान् अुन्हें शक्ति और क्षमता प्रदान करे। जैसा कि श्री सीताराम शास्त्रीने अपने 'शराबबंदी रद्द नहीं की जा सकती' लेखमें कहा है, अिस समय आन्ध्र-जन शराबबंदीको विशेष रूपसे याद रखें, जिसे अधिक सफलताके साथ जारी रखना अुनका राष्ट्रीय कर्तव्य है।

अेक प्रश्न अुठाया गया है कि आन्ध्र राज्यके निर्माणकी घटना दूसरे भाषावार विभागोंके लिअे अेक चेतावनी है या अुदाहरण? आन्ध्र अैसा पहला राज्य है, जो भाषाके आधार पर राज्योंका पुनर्निर्माण करनेकी जनताकी मांग पर खड़ा किया गया है। अिसलिअे यह घटना स्वभावतः महत्त्व ग्रहण कर लेती है। और अिस रूपमें वह अेक अुदाहरण भी है और चेतावनी भी। जो लोग आन्ध्रोंकी तरह अपना स्वतंत्र प्रान्त बनानेके लिअे अत्यन्त अुत्सुक हैं, अुनसे यह कहती है कि अुन्हें कमसे कम विरोधकी बुनियाद पर अिसका आरंभ करनेकी बुद्धिमानी दिखानी चाहिये; यानी अुन्हें अपने राज्योंके 'विशालीकरण' के प्रयत्नसे दूर रहकर विवादरहित भागोंसे ही अपना अलग राज्य बनानेका फैसला करना चाहिये। लेकिन हमें समझना चाहिये कि भाषावार राज्योंके निर्माणके अैसे प्रयत्न हमारे लिअे चेतावनीका काम भी करते हैं, क्योंकि वे हमारी राष्ट्रीय अेकताको खतरेमें डाल सकते हैं। श्री जवाहरलालजीको अिसमें साम्राज्यवादकी जो गंध आती है, वह बिलकुल ठीक है। यह हलचल अपने सही ध्येयसे गिरकर भाषावार पाकिस्तानवादका रूप भी ले सकती है। अिसके अलावा, अुपवास वगैरा साधनोंका अिसमें कोअी स्थान नहीं होना चाहिये। वे न तो लोकतांत्रिक कहे जा सकते और न सत्याग्रह कहे जा सकते। फिर हमें यह भी समझना चाहिये कि नये राज्यका निर्माण अपने आपमें किसी समस्याका हल नहीं है। अगर वह खुद अेक समस्या न बन जाय, तो भी दूसरी कुछ आर्थिक, राजनैतिक और शायद साम्प्रदायिक या जातीय समस्याओंको अवश्य जन्म देता है। और यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि नया राज्य भाषाके आधार पर रचा जानेके कारण जरूरी तौर पर अिन समस्याओंको ज्यादा अच्छे ढंगसे हल कर सकेगा। ज्यादासे ज्यादा, अलग राज्य प्राप्त करनेसे सन्तुष्ट होनेवाला जनमत नअी परिस्थितिमें अुत्साह और अुमंगसे काम करनेकी सहायक भावना पैदा कर सकता है। हम सब यह शुभ कामना करें कि आन्ध्रको यह सौभाग्य प्राप्त हो और वह हमारे अेक देश और अेक राष्ट्रके मजबूत और सुखी अंगके रूपमें विकास करे।

१५-१०-'५३ **मगनभाअी देसाअी**

(अंग्रेजीसे)

*खादीग्राम, जमूअी (बिहार)में ता० ५–९–'५३ को हुअे विभिन्न प्रांतोंके भूदान-संयोजकों और अन्य प्रमुख कार्यकर्ताओंके सम्मेलनमें दिये गये भाषणसे।

औद्योगीकरणसे बचना चाहिये

हिन्दुस्तानको अमेरिका और अिंग्लैण्डकी तरह बना देनेके लिअे यह जरूरी है कि अुसके मालकी खपतके लिअे कोअी अन्य जातियां और देश खोजे जायं। यह स्पष्ट है कि अब तक पश्चिमी राष्ट्रोंने युरोपके बाहर संसारके सभी देशोंको खोखला करनेके लिअे बांट रखा है और यह भी स्पष्ट है कि अब कोअी नअी दुनिया अीजाद होनेको नहीं है।

जरा सोचिये कि हिन्दुस्तानके पश्चिमकी नकल करनेका क्या दुष्परिणाम होगा? निःसन्देह पश्चिमी देशोंमें औद्योगवाद और परराष्ट्र अपहरणकी हद हो चुकी है। अगर ये रोगग्रस्त लोग अपने दोषोंका अिलाज करनेमें असमर्थ हैं, तो भला हम नौसिखिये किस प्रकारसे अुन्हें दूर कर सकेंगे?

हकीकत यह है कि यह औद्योगिक सभ्यता अिसलिअे अेक रोग है कि अुसमें निरी बुराअी ही है। हमें मनोहर शब्दों और वाक्योंके भ्रममें नहीं पड़ जाना चाहिये। मुझे तार या जहाजसे कोअी विरोध नहीं है। वे अगर औद्योगवाद तथा अुससे संबंध रखनेवाले समस्त कारखानों और धंधोंके सहारेके बिना ठहर सकते हैं तो भले रहें। वे अपने आपमें लक्ष्य नहीं हैं। तार और जहाजकी खातिर हमें अिस लूट और शोषणको बर्दाश्त नहीं करना चाहिये। वे मानव-जातिके स्थायी कल्याणके लिअे किसी भी प्रकार अनिवार्य नहीं हैं।

हिन्दुस्तान अन्य सभ्यताओंके आक्रमण अिसलिअे सहता आया है कि वह अपने विकास पर दृढ़ है। यह बात नहीं है कि अुसने तब्दीलियां की ही नहीं, बल्कि जो तब्दीलियां कीं, अुन्होंने अुसके विकासमें सहायता ही पहुंचाअी है। अपनी स्थितिको छोड़ कर औद्योगवादको स्वीकार कर लेना मानो घर बैठे आपत्ति बुलाना है। आजकल जो आपत्ति है, वही कौन थोड़ी है? दरिद्रता हमारे यहांसे विदा होनी ही चाहिये। लेकिन अुसका अिलाज औद्योगवाद नहीं है।

हिन्दुस्तानका भविष्य पश्चिमके अुस खूनी रास्ते पर नहीं है, जिससे आज वह थका हुआ-सा मालूम होता है; बल्कि शांतिके अुस अहिंसा-पथ पर है, जिसकी प्राप्ति केवल सादगी और धार्मिक जीवनसे ही हो सकती है। अिसलिअे आलसीकी तरह निरुपाय होकर हिन्दुस्तान यह नहीं कह सकता कि "पश्चिमकी अिस बाढ़से मैं नहीं बच सकता।" अपनी और संसारकी भलाअीके लिअे अिस बाढ़को रोकनेकी शक्ति अुसे प्राप्त करनी ही होगी।

(हिन्दी नवजीवन, ७-१०-'२६) **मो० क० गांधी**

विषय-सूची

		पृष्ठ
महादेवके नन्हेरे	स्वामी आनन्द	२६५
भूदान-प्राप्ति और वितरण	कृष्णराज मेहता	२६६
केक, क्रिकेट और कालर	सुरेश रामभाअी	२६७
समानता और ट्रस्टीशिप	मगनभाअी देसाअी	२६८
श्री चन्द्रशंकर शुक्ल	मगनभाअी देसाअी	२६९
टीका अनिवार्य किस लिअे?	मगनभाअी देसाअी	२६९
आर्थिक योजना और स्वदेशी	मगनभाअी देसाअी	२७०
भूदान-आन्दोलनमें अुठनेवाले प्रश्न	विनोबा	२७१
आन्ध्र सफल हो!	मगनभाअी देसाअी	२७२
औद्योगीकरणसे बचना चाहिये	मो० क० गांधी	२७२

www.vinoba.in